New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

19.

भारतीय डायस्पोरा की पहचान : क्षेत्रगत / भाषा

डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. राजीव रंजन राय
प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
ईमेल-mlgbharat@gmail.com

मुख्य शब्द : डायस्पोरा , स्वभूमि, गंतव्य देश, गिरमिटिया, भारतीयता क्षेत्रगत / भाषाई, पहचान , अनुबंधित श्रमिक

किसी भी मानव समुदाय के पहचान की निर्मिती उस समुदाय के 'अन्य' (पड़ोसी या बृहद समुदाय) के तुलना में होता है। भारतीय डायस्पोरा परिप्रेक्ष्य में भारतीयता/भारतीय पहचान का निर्माण का संबंध भारतीयों का प्रवासन अनुभव और प्रवासन परिप्रेक्ष्य से है। यह प्रवासन अनुभव स्थानों (स्वभूमि और गंतव्य देश), काल, संस्कृति और राजनीतिक आर्थिक परिप्रेक्ष्यों से संबद्ध होता है। (Bhat and Bhaskar 2007) भारतीय लोगों का समुद्रपारीय देशों में प्रवासन ऐतिहासिक रूप से कई चरणों और स्वरूपों के साथ- साथ भारत के विविध भाषा और सांकृतिक क्षेत्रों से हुआ है। उपलब्ध इतिहास में प्रवासन के साक्ष्य सिन्धु घाटी से लेकर आज तक भारतीय व्यापारी, धर्म प्रचारक, सैनिक, कलाकर, सिद्धदोष, गिरमिटिया, कंगनी, मैस्री, उच्च कुशल प्रवासन प्रस्तुत आलेख में, समुद्रपारीय देशों में भारतीय डायस्पोरा की भाषिक/क्षेत्रीय विविधता एवं पहचान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत आलेख उपलब्ध साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर तैयार किया गया है।

मराठी डायस्पोरा :

मराठी लोग प्रमुखत: महाराष्ट्र में बसे हुए हैं। मराठी लोगों की सांस्कृतिक परंपरा काफी प्राचीन है। महाराष्ट्र में बोली जानेवाली मराठी भाषा संस्कृत भाषा द्वारा निर्मित है। आज की वर्तमान स्थिति में मराठी भाषा यह महाराष्ट्री प्राकृत भाषा द्वारा निर्मित है। भारतीय डायस्पोरा के मराठी समुदाय में आज के समय में पुराने मराठी समाज की तुलना में कम मराठी भाषा बोली जाती है। सामान्यत: मराठी भाषा घरों के अंदर ही बोली जाती है। सामान्य बातचीत में तथा दूसरे समुदाय के साथ संवाद, संप्रेषण के लिए उस देश की क्रिओल भाषा का प्रयोग किया जाता है। नई पीढ़ी में मराठी भाषा की खराब होती स्थिति के कारण इसे मराठी समाज ने मंदिरों तथा संस्थाओं के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार पुन: प्रारंभ किया।

मॉरीशस में मराठी भाषी भारत के महाराष्ट्र से 1834 में अनुबंध श्रमिक के रूप में तथा कुछ मराठी स्वतंत्र रूप से प्रवासित हुए थे। मराठियों का प्रवासन 1852 में निम्नलिखित जिलों जैसे- कोंकण, सतारा, कोल्हापुर, सांगली, सोलापुर, रत्नागिरी, पुना, नागपुर, खानदेश से साम्राज्यवादी उपनिवेशों जैसे- मॉरीशस, फिजी, गुयाना और त्रिनिदाद-टोबागो के लिए हुए। मराठी डायस्पोरा मुखत: मॉरिशस है। मॉरिशस में अधिकांश मराठी डायस्पोरा हिंदु धर्म के लोगों

का है और वे अधिकतर मुंबई बंदरगाह से प्रवासित हुए हैं प्रवासित होनेवाले मराठियों में प्रमुख जातियॉ शामिल थीं- मराठा (Tinker H 1974: 58) पुरवारी, सुनेराने। (A Study of Marathi Settlements in Mauritius, 2012)

ग्रामीण स्तर पर मराठियों के संगठन का नाम लाकौर है। मराठियों के प्रवासन से संबंधित रजिस्टर में नाम के जगह कुलनाम (उपनाम) जैसे- महार लिखा है। आज मराठियों की करीब 50 से अधिक पंजीकृत संस्थाएँ हैं। इनमें सबसे प्रमुख संस्था का नाम है- मॉरीशस मराठी मंडली फेडरेशन जिसे 1960 में बनाया गया था। सभी संस्थाएं मॉरीशस मराठी मंडली फेडरेशन के नेतृत्व में कार्य करती है। यह संस्था समुद्रपारीय मराठियों के लिए प्रवक्ता का कार्य करती है। जाकरी, मारा, नामक प्रवासित मराठियों के प्रमुख नाच गान है। 'गमत', गिरमिटिया मज़दूर शादी-ब्याह के समय झाल, ढोलक, चिमटा तथा सम्बल, तबला, परंपरागत वाद्ययंत्र का उपयोग नाचने गाने के लिए किया करते थे। मॉरीशस में मराठी भाषा के उत्थान के लिए, 1960 में मॉरीशस मराठी मंडली फेडरेशन की स्थापना की गई।

मराठी डायस्पोरा मॉरीशस में मराठी भाषा के आधार पर पहचाना जाता है। सेंसस के अनुसार- करीबन 1888 लोगों ने घोषित किया कि वे घर में मराठी भाषा का प्रयोग करते हैं और 1656 लोगों ने घाषित किया कि वे घरों में क्रिओल और मराठी भाषा का उपयोग करते हैं। इसके अलावा मराठी भाषी भारत की स्वतंत्रता के पश्चात अनेक विकसित देशों में भी प्रवासित हुए। 1970 के दशक में मराठी लोग अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा आदि विकसित देशों में प्रवासित हुये। अच्छे रोजगार के अवसर उपलब्ध होने की वजह से वे वहीं बस गये। इस शुरूआती दौर में चिकित्सीय शोध और शैक्षणिक क्षेत्रों में काम करने हेतु अनेक मराठी लोग अमेरिका में आकर बस गये। ये मराठी भाषी लोग अमेरिका के विविध शहरों में बसने के बाद हमेशा एक दुसरे के आपसी के संपर्क में रहते थे। यहां पर मराठी डायस्पोरा के बीच नेटवर्क जुड़ाव देखने को मिलता है। इन्हें हम नृजातीयता के नाम से संबोधित कर सकते हैं।

अमेरिका समाज में मराठी भाषी लोग परिवार में मराठी भाषा का प्रयोग करते हैं । इसी वजह से सभी बच्चे मराठी भाषा से परिचित है। परंतु स्कूलों में भाषा संबंधि समस्या उत्पन्न होती है। क्योंकि किताबें प्रमुखत: अंग्रेजी में होती हैं। इस वजह से मराठी भाषी लोगों के बीच से दिन- प्रतिदिन भारतीय भाषा और संस्कृति लुप्त होती जा रही है। परंतु अपनी संस्कृति और अपनी भाषा के प्रति मराठी लोगों का भावनात्मक लगाव इतना गहरा था कि उन्होंने अपनी संस्कृति और भाषा के संवर्धन हेतु अमेरिका में मराठी पाठशाला की स्थापना की ताकि उनके बच्चे अपने देश से, अपनी संस्कृति से और अपनी भाषा से हमेशा जुड़े रह सकें। मराठी डायस्पोरा समूह मराठी पहचान को कायम रखने हेतु मराठी भाषा की शिक्षा अपने बच्चों को दे रहे हैं। मातृभाषा और सांस्कृतिक समृद्धि स्वयं की मूल पहचान को समूह के रूप में कायम रखने का आत्मविश्वास प्रदान करती है। इस तरह से मराठी डायस्पोरा समूह गंतव्य देशों के समाज में सफलतापूर्वक जीवन व्यतित कर रहा है और आपस में सांस्कृतिक जुड़ाव को बनाऐ हुए हैं।

मराठी डायस्पोरा विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सव के माध्यम से भी अपनी परंपरा, रिवाज और क्षेत्रिय विशेषताओं को बनाये हुये है। इसके लिये विविध भारतीय त्योहारों को वो गंतव्य स्थानों पर बड़े ही उत्साह से मनाते हैं। मराठी डायस्पोरा ने उत्सवों के माध्यमों से भी अपनी भारतीय संस्कृती को संजोये रखा है, जैसे गणेशोत्सव, लेसिम, फुगडी आदि महाराष्ट्र की नृत्य परंपरा के साथ भगवान गणेश का आगमन किया जाता है। संगीत, पुजा, श्लोक, आरती और भजन आदि सभी पूजा-पाठ की विधियां मराठी भाषा में करते हैं । जाकरी, मारा, नामक प्रवासित मराठियों के प्रमुख नाच गान है। 'गिरमिटिया' मराठी मज़दूर शादी-व्याह के समय गाते-नाचते थे जिसका नाम था 'गमत', झाल, ढोलक, चिमटा तथा सम्बल, तबला, परंपरागत वाद्ययंत्र थे।

इस प्रकार मराठी डायस्पोरा ने गंतव्य स्थानों पर भी अपने सांस्कृतिक जीवन, पप्राचीन महाराष्ट्रीयन संस्कृति, सभ्यता और विश्वास को संजोये रखा है। मराठी भाषा और मराठी साहित्य का विकास भी उन्होंने महाराष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान की अभिव्यक्ति के रूप में कर रखा है। स्थानीय व क्षेत्रिय देवताओं और संतों के प्रति आदरभाव को उन्होंने बनाये रखा है। इनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में गणेश चतुर्थी, रामनवमी, मकर संक्रांती, पोला इत्यादि त्योहारों का प्रमुख महत्व है। और इसके लिये उन्होंने गंतव्य स्थानों पर विविध शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन बनाये रखे है और अपनी सामाजिक सांस्कृतिक प्रथाओं से,रीति- रिवाजों, मान्यताओं से मराठी समाज ने अपने को स्वभूमि के मराठी समाज और भारत से आज भी जोड़े रखा है।

तेलगू डायस्पोरा :

19 वीं और 20 वीं सदी में दक्षिण भारत से प्रवासित भारतीयों में सर्वाधिक संख्या तेलगू भाषी समुदाय की है। यह प्रवासन ब्रिटिश भारत के मद्रास प्रेसिडेंसी से हुआ जिसका आज का नाम आंध्रप्रदेश राज्य है जो भारत का तीसरा बड़ा राज्य है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूखा, अकाल तथा बाढ़ ने घरेलू और कुटीर उद्योगों को सिकोड़ दिया जिससे रोजगार की कमी ने तेलगू भाषी समुदाय को प्रवासित होने पर मजबूर किया। इसी समय, दूसरी ओर तेलगू भाषी समुदाय के लोगों ने ब्रिटिश उपनिवेशों में बागान श्रमिकों के रूप में अवसर को देखा। इसी अवसर ने तेलगू समुदाय को दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, फिजी, गुयाना, ट्रिनिदाद-टबैगो, सूरीनाम के लिए अनुबंध श्रमिक के रूप में प्रवासित होने पर मजबूर किया। 19 वीं सदी में कुछ तेलगू भाषी कंगनी और मैस्री प्रणाली के तहत बर्मा, मलाया, मलेशिया, इंडोनेशिया के बगानों में मजदूर बनाकर ले जाये गए जहां उनसे रबर, कहवा, चावल, चाय आदि के बागानों, खेतों में काम करवाया जाता था। (Bhat and Narayan 2010:18)

तेलगू लोगों का नटाल, दक्षिण अफ्रीका के लिए प्रवासन 1860 में अनुबंध श्रमिक प्रणाली के तहत भारत के तत्कालिन मद्रास प्रेसिडेंसी से हुआ था। यह प्रवासन 1911 तक चला। ये अनुबंधित मज़दूर दक्षिण अफ्रीका में गन्ने के खेतों तथा चाय बगानों, खानों-खद्दानों में, रेलवे निमार्ण में कार्य हेतु लगाये जाते थे। इन मजदूरों में मुख्य रूप से नायडू थे। इसके अलावा तेलगू समाज के कामसरलो (Blacksmith) तथा कुमारा (potter) लागों का प्रवासन दक्षिण अफ्रीका में हुआ जो कृषक, फार्म श्रमिक, किरानी, शिक्षक रूप में कार्य करते थे। कुछ तेलगू व्यापारियों, सौदागरों (कोमाटी) का भी स्वतंत्र प्रवासन हुआ परंतु आज वे अपनी पहचान खो चुके हैं। कुछ तेलगू लोग आज भी नटाल, पिट्टरमेरिजवर्ग के लिए प्रवासित हो रहें हैं। जहां वे खाद्य बटवारे, घरेलू वस्तुओं के व्यापारिक गतिविधियों से जुड़े हैं। कुछ तेलगू वहां सिनेमा और ट्रांसपोर्ट व्यवसाय से जुड़े रहे हैं।

भारत की स्वतंत्रता के बाद तेलगू भाषी लोगों में उच्च शिक्षित, व्यावसायिक पेशे से संबंधित कुशल डॉक्टर, इन्जीनियर, वैज्ञानिक, छात्र और वैश्वीकरण के दौर में साफ्टवेयर इंजीनियर आदि का प्रवासन अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, सिंगापूर , आस्ट्रेलिया, सिंगापूर और न्यूजीलैंड के लिए हुआ। 1931 में निर्मित 'आंध्र महासभा' दक्षिण अफ्रीका के पहले तेलगू भाषी लोगों ने अपने को संगठित नहीं किया था पर महासभा निर्माण के बाद से काफी सक्रिय है। आज महासभा की 30 शाखाएं हैं जो प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय के स्तर पर तेलगू शिक्षा के लिए कार्य कर रही है, उदाहरण के लिए, डरबन यूनिर्वसिटी में तेलगू भाषा की शिक्षण की व्यवस्था है।

आंध्र प्रदेश सरकार ने 1975 में वैश्विक स्तर पर तेलगू भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने एवं उसके प्रसार के लिए 'अंतरराष्ट्रीय तेलगू संस्थान' की स्थापना की। इस संस्था के कार्यों में मुख्यत: शामिल है, विदेशों

में बसे तेलगू भाषी समुदाय को एकता के सूत्र में बांधना, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन करना, तेलगू भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की पढ़ाई विदेशी विद्यालयों में हो, के लिए काम करना। संस्थान ने इसी कड़ी में, तेलगू भाषियों का विदेशों में सम्मेलन का आयोजन मलेशिया (1981) और मॉरीशस (1990) (Bhat and Bhaskar 2011:119) में किया जहां बड़ी संख्या में तेलगू भाषी समुदाय के लोगों ने हिस्सा लिया।

'द वर्ल्ड तेलगू फेडरेशन' (WTF) की स्थापना 1992 में समुद्रपारीय तेलगू भाषाई समाज की भाषा एवं सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए किया गया। प्रथम WTF का उद्घाटन आंध्रप्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री एन.टी. रामाराव के द्वारा न्यूयार्क में हुआ। WTF, आज विश्व के सभी देशों की तेलगू भाषी संस्थाओं और आंध्रप्रदेश सरकार के साथ समन्वय की भूमिका निभाती हैं। WTF, भाषा एवं संस्कृति के विकास के साथ-साथ तेलगू भाषी समाज के लिए व्यवसाय, पर्यटन, शिक्षा और विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी के विकास में भी मदद करती है। WTF ने समुद्रपारीय तेलगू डायस्पोरा को आंध्रप्रदेश में निवेश के लिए भी एक मंच उपलब्ध कराती है तथा तेलगु डायस्पोरा के लिए मार्गदशक की भूमिका निभाती है।

तमिल डायस्पोरा :

भारत समेत पुरे भारत में करीब 70 मिलियन तमिल भाषी लोग हैं। (सिवा सुब्रमनीयम, 2010) तमिल भाषी लोगों का भारत से प्रवासन ब्रिटिश, डच और पुर्तगाली उपनिवेशों अनुबंध श्रमिक प्रणाली के अलावा फ्रेंच प्रशासकों के द्वारा फ्रेंच उपनिवेशों में अनुबंध श्रमिक से पहले ले जाया गया था। तमिलों को कंगनी/ मेस्त्री व्यवस्था के तहत मलेशिया रबर उत्पादन के लिए लेजाया गया।(Jain 2004:176-177) चोल शासकों के समय तमिलों का प्रवासन श्रीलंका में हुआ। (झा और श्रीमाली 1981:371) ब्रिटिश उपनिवेशों में सभी फ्रेंच उपनिवेशों जैसे- रियुनियन, मार्टिनिक और ग्वाडेलुप में तमिल भाषी समुदाय का फ्रांसिसी समाज और संस्कृति में समांगीकरण की ज्यादा कोशिश की गई। मॉरिशस के तमिलों का मानना है कि तमिल सिर्फ एक भाषा नहीं बल्कि एक संस्कृति और जीवन जीने का तरीका है जो तेलगु , मराठी , हिन्दू से अलग है। (Bhat and Bhaskar 2011:118-119)

'द वर्ल्ड तमिल क्रांफ्रेंस' (WTC) संगठन तमिलनाडू सरकार से प्रेरित और संरक्षित संगठन है । यह संगठन, समुद्रपारीय तमिल भाषी समुदायों को एकता के सूत्र में बांधने के लिए सालों भर सम्मेलन तथा कार्यक्रम करते हैं। तमिलनाडू के पूर्व मख्य मंत्रियों यथा एम. भक्तावात्सालम, अन्नादुरई, एम.जी. रामचन्द्रन और सुश्री जयललिता ने WTC को तमिलों के वैश्विक सम्मेलनों के लिए हमेशा प्रोत्साहित करते रहे। ये सम्मेलन क्वालालामपुर (1967), चेन्नई (1965), पेरिस (1970), जाफना (1974), मदुरई (1981), क्वालालामपुर (1987), मॉरिशस (1989), तन्जौर (1995), और कोयम्बटूर (2010), में हुए- (जयप्रकाश, 2010)। श्रीलंका जाफना प्रान्त में बसे तमिल डायस्पोरा के साथ श्रीलंका सरकार द्वारा भेद-भाव किया जाता रहा है । इस कारण श्रीलंका में बसे तमिल समाज में असंतोष व्याप्त है। इसीकारण जाफना के तमिल अपने लिए अलग तमिल प्रान्त तमिल ईलम की मांग करते है और अपने इस मांग में भारत सरकार का समर्थन चाहते हैं।

तमिल अध्ययन का पहला अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस मलया विश्वविद्यलाय, क्वालालामपुर मलेशिया में 16 अप्रैल से 23 अप्रैल 1966 में हुआ जिसके प्रायोजक थे- अंतरराष्ट्रीय तमिल शोध संगठन, राष्ट्रीय शिक्षा विकास परिषद, मलाया और मलाया विश्वविद्यालय, मलाया। इस अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेस का उद्घाटन मलेशिया के तत्कालीन प्रधानमंत्री टी. अब्दूल रहमान ने किया तथा इसमें 21 देशों के 132 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तमिल अध्ययन का द्वितीय

अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास में, 1968 में हुआ जिसके प्रायोजक थे- अंतरराष्ट्रीय तमिल शोध संगठन और मद्रास सरकार, भारत। इसी प्रकार, चतुर्थ 1974, जाफना, श्रीलंका में, चतुर्थ सम्मेलन के लिए श्रीलंका के तत्कालीन प्रधान मंत्री सिरिमाओ भण्डारनायके की चाहत थी कि वह श्रीलंका की राजधानी, कोलंबो में हो परंतु तमिल कांफ्रेंस के संगठनकर्ताओं ने इसे श्रीलंका के तमिल बहुसंख्यक प्रदेश/ क्षेत्र जाफना में करने का निर्णय लिया।

तमिल अध्ययन का पांचवा अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस तमिलनाडू के मदुरई में हुआ। इसी कांफ्रेंस के बाद तमिलनाडू विश्वविद्यालय, तंजौर में बनाया गया। यह आशा थी कि राज्य स्तर के तमिल कांफ्रेंस के बाद तमिलनाडू विश्वविद्यालय नौवां अंतरराष्ट्रीय तमिल कांफ्रेंस के बाद 'विश्व तमिल विश्वविद्यालय' में तब्दील हो जाएगा। परंतु राजनैतिक अर्न्तविरोध के कारण जनवरी 2010 में होने वाला 9 वॉं विश्व तमिल कॉंफ्रेंस कोयम्बटूर में नहीं हुआ। तत्कालीन तमिल तमिलनाडू सरकार ने विश्व क्लासिकल तमिल कांफ्रेस के नाम से कोयम्बटूर में करवाया। इस प्रकार 2010, तक आठ 'विश्व तमिल सम्मेलनों का सफलतापूर्ण आयोजन करवाकर, तमिलनाडू सरकार ने विश्व स्तर पर फैले हुए तमिल भाषी डायस्पोरा को एकता के सूत्र में बांधने की कोशिश की।

तमिल भाषी समुदाय एक अन्य विश्व स्तरीय तमिल संगठन बनाने की कोशिश में है जो विश्व स्तर पर फैले तमिल संगठनों के बीच एकता एवं समन्वय का कार्य कर सके। साथ ही, यह संगठन तमिल समुदाय के लिए मौद्रिक क्रियाकलापों, उद्यम, व्यापार जैसे कार्य-व्यापार में भी मदद कर सके। 'विश्व तमिल कनफेडरेशन' विश्व स्तरपर फैले तमिल समुदाय का एक दूसरा महत्वपूर्ण संगठन है जिसकी स्थापना, 2002 में की गई थी। उत्तरी अमेरिका का 'तमिल संगम' संस्था तथा आस्ट्रेलिया का 'तमिल संगम' 2010 में, विश्व तमिल कन्फेडरेशन के साथ सूचीबद्ध हुआ। (Bhat and Narayan 2010:20)

गुजराती डायस्पोरा :

गुजराती समुदाय का समुद्रपारीय प्रवासन की शुरूआत 19 वीं सदी में अनुबंध श्रमिक प्रणाली के तहत अफ्रीका महादेश के लिए और 20 वीं सदी में यह प्रवासन दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिए छोटे-छोटे तथा पेट्टी व्यापारियों (जैसे बोहरा, इस्माइल, खोजा) की तरह के ब्रिटिश उपनिवेशों में हुआ। दक्षिण अफ्रीका के लिए भारतीयों का प्रवासन 1860 से प्रारंभ हुआ जब पहली बार पानी का जहाज अनुबंधित श्रमिकों को लेकर वहां पहुंचा। (Goolam Vahed 2010)1893 दक्षिण अफ्रीका के लिए महात्मा गांधी का जाना हुआ। गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका जाना जीवन के साथ साथ विदेशों में बसे भारतीयों के मानवाधिकार के लिए संघर्ष में बहुत मददगार सिद्ध हुआ।(दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का इतिहास 1968) इनके कठिन परिश्रम और लगन ने इन्हें समृद्ध बनाया और यही समृद्धि मेजबान देशों की स्थानीय जनता के लिए इर्ष्या का कारण बना। मेजबान देशों तथा समाजों के विभेदकारी नीतियों, व्यवहारों के कारण भारतीय व्यापारी, उद्यमी ,कृषक गुजराती समुदाय के लोग अफ्रीकी देशों यथा युगाण्डा, केन्या को छोड़कर द्वितीय प्रवासन के तहत यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, यू.एस.ए. जाना पड़ा । द्वितीय प्रवासन के शिकार हुए गुजरातियों को तो अपने कठिन परिश्रम से उपार्जित धन, संपत्ति को भी अपने साथ अफ्रीका से नहीं लाने दिया गया।

गुजरात सरकार और श्री स्वामी नारायण गदी संस्थान (गुरूदेव जीवन प्राण श्री मुक्त जीवन स्वामी बाबा जी द्वारा स्थापित अध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाज कल्याण के लिए विश्वस्तरीय केंद्र) द्वारा प्रायोजित 'विश्व गुजराती कांफ्रेंस' का आयोजन, 'विश्व गुजराती समाज' द्वारा किया गया, जिसमें विश्व स्तर पर फैले अनिवासी भारतीय गुजरातियों को निमंत्रित किया गया। प्रत्येक वर्ष, प्रवासी भारतीय दिवस के तुरंत बाद गुजरात सरकार

अनिवासी गुजरातियों और स्थानीय गुजरातियों और एन.जी.आर. निवेशकों के लिए एक सप्ताह हेतु पतंगबाजी और दांडिया नाच/नृत्य का आयोजन पुरे गुजरात के विकास के लिए करती है। (Bhat and Narayan 2010:20-21)

'विश्व गुजराती समाज' (VGS) की स्थापना विश्व भर में फैले गुजराती डायस्पोरा के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन के रूप में 1989 में की गई। VGS ने अपने 18 वर्षों की आयु में फैलते-विकसित होते विश्व के 17 देशों के गुजरातियों को अपनी सदस्यता से जोड़ा है। VGS, गुजरात के अहमदाबाद में 'पब्लिक ट्रस्ट' के रूप में निबंधित है और इसका संचालन चुने हुए पदाधिकारियों द्वारा किया जाता है , जो विश्व भर में फैले हैं। VGS की एक निबंधित शाखा न्यूर्याक में भी है। VGS की सदस्यता विश्व भर में रहने वाले सभी गुजरातियों तथा गुजराती संगठनों के लिए खुली है। आज इसके सदस्यों में प्रभुत्वशाली गुजराती व्यावसायिक संगठन भी शामिल है। VGS विश्व भर में फैले गुजराती डायस्पोरा की समृद्धि, विकास और प्रगति के साथ-साथ उनमें भाई-चारे की भावना को विकसित करने के लिए और उन्हें गुजराती भाषा, परंपरा, संस्कृति के अनुरक्षण के लिए प्रेरित करने का कार्य करती है।

विश्व गुजराती समाज के द्वारा तीन 'विश्व गुजराती सम्मेलनों' का आयोजन 1989 में अहमदाबाद, 1996 में मुम्बई, और 1999 में बड़ोदरा में किया गया। चौथा 'विश्व गुजराती सम्मेलन' को 'स्वर्णिम गुजरात' (Golden Jubilee Year of Gujrat) के रूप में अहमदाबाद में मनाया गया। विश्व भर में रहने वाले गुजराती समुदाय को 'स्वर्णिम गुजरात सम्मेलन' ने एक ऐसा मंच दिया जहां पर वे आपस में मिल सके और गुजराती समाज से संबंधित विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक मुद्दों पर बात-चीत कर सके। 'गजराती समाज' एक दूसरा संगठन है जो विश्वभर में फैले गुजरातियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को प्रोत्साहन देने के लिए वैश्विक नेटवर्क के रूप में कार्य करता है। nrigujratis.co.in पोर्टल गुजराती समाज के लिए विवाह से लेकर रियल स्टेट के व्यवसाय से संबंधित सुचना उपलब्ध कराती है। भारतीय डायस्पोरा समुदाय में गुजरातियों के अलावा अपने समाज से संबंधित ऐसा विश्वस्तरीय नेटवर्क नहीं है। गुजरात की सरकार स्वयं इन नेटवर्क को प्रोत्साहित करती है। गुजराती के और गुजरात के विकास के लिए दो प्रमुख वेवसाईट - htt://nri-gujarat.com / guj-samaj_sa.htm .

भोजपुरी डायस्पोरा :

भारत में भोजपुरी भाषी लोग उत्तरप्रदेश, बिहार में मुख्य रूप से रहते हैं। परन्तु आज भोजपुरी भाषी लोगों की उपस्थिति पुरे भारत में ही नहीं बल्कि समुद्रपारीय देशों में भी है । 19 वीं सदी से पुरे विश्व में फैले भोजपुरी भाषी लोगों को एक साथ एक मंच पर लाने के लिए द्वितीय 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन', 2009 में मॉरीशस में आयोजित किया गया। यह सम्मेलन इस उद्देश्य के साथ प्रारंभ हुआ कि विश्व में निवास करने वाले 80 मिलियन भोजपुरी लोगों के आर्थिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक के साथ-साथ राजनैतिक गतिशिलता / गतिकी को प्रोत्साहित व संवर्धित कैसे किया जाय। भारतीय मूल के लोगों की कुल जनसंख्या में भोजपुरी भाषी लोगों की जनसंख्या अच्छी-खासी है। भोजपुरी भाषी लोगों की जनसंख्या मॉरीशस, त्रिनिदाड,(Jayaram 2004:149-150) और टोबैगो, गयाना, सूरीनाम, फिजी और नेपाल में काफी है। (Hookoomsing 2009:36-37, 2011:111, Jagannathan 2003:148-150) इसलिए इन देशों में भोजपुरी को राष्ट्र भाषा बनाए जाने की मांग यदा-कदा उठती रहती है (Boodhoo, 2009)। उभरते हुए वैश्विक भोजपुरी उायस्पोरा को अपने पुर्वजों की भोजपुरी माटी से जोड़ने के लिए बिहार की सरकार ने सकारात्मक कदम उठाए हैं। आज संचार माध्यमों के उभार के कारण वैश्विक भोजपुरी समाज आपसी क्षमता का प्रयोग एक दूसरे

की मदद व विकास के लिए कर सकते हैं। द्वितीय 'विश्व भोजपुरी कांफ्रेस' में करीब 200, समुद्रपारीय भोजपुरी प्रतिभागी विश्व के विभिन्न भागों यथा-दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, नीदरलैण्उ और भारत से आए। वे विशेषज्ञ यथा शिक्षा, साहित्य, जनसंचार, वाणिज्य-व्यापार और उद्योग, कानून, फिल्म और नाट्य कला, और चिकित्सा से थे। इस सम्मेलन में मुख्य मांगों के अलावा तीन समानान्तर सत्र भी चलाए गए जिनके केंन्द्रीय विषय थे- भोजपुरी भाषा और साहित्य, खाद्य-परंपराएं और व्यावसायिक अवसर। इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव यह पारित किया गया कि भारत सरकार से अनुरोध किया जाए कि भोजपुरी को संविधान की 8 वीं अनुसूची में शामिल किया जाए। दूसरा प्रस्ताव पारित हुआ कि तीसरा विश्व भोजपुरी सम्मेलन का आयोजन 2013 में हालैण्ड में किया जाए। अन्य महत्वपूर्ण प्रस्तावों में था कि भोजपुरी की पढ़ाई को पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, सेकेण्डरी एवं विश्वविद्यालयीय स्तर अलग-अलग डायस्पोरीय देशों की परिस्थिति के अनुसार प्रारंभ करने की मांग की जाए। एक प्रस्ताव यह भी पारित किया गया कि भोजपुरी भाषा, साहित्य-संस्कृति के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए भारत और भोजपुरी डायस्पोरा के बीच विनिमय कार्यक्रम हो। इस सिलसिले में एक बेबसाईट *Vishwa Bhojpuri Sammellan* बनायी गयी। सम्मेलन में इस बात पर भी जोर दिया गया कि भोजपुरी अनुबंध श्रमिक के रूप में भारत से समुद्रपारीय देशों में गए भोजपुरी लोगों के लिए एक केंद्र की सुविधा प्रदान की जाए, जहां से वे अपने मूल देश के मूल स्थान की तलाश कर सकें।

आज भी कोई भी व्यक्ति यह जानकर विस्मृत हो सकता है कि भोजपुरी से संबंधित बहुत-सारे वेबसाईट दशकों से कार्य कर रही है। उनमें कुछ प्रमुख है – *Anjoria.com: the Bhojpuri Sansar.com, Bhojpuri Duniya.com, Bhojpuri Film Awards* और उत्तरी अमेरिका का भोजपुरी संगठन (BANA) ।(Bhat and Narayan 2010:21-22)

इस प्रकार समुद्रपारी भोजपुरी डायस्पोरा ने अपने संघर्ष और लगन से विदेशी धरती पर पहचान और जगह बनायी है। फिर भी आज के बहुसंख्यक भोजपुरी डायस्पोरा के बीच पारदेशीय नेटवर्क को मजबूत करने की जरूरत है ताकि वे आपस में जुड़कर अपनेको सामाजिक- सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक रूप से और ज्यादा मजबूत कर सकें और भारत जो उनकी पूर्वज भूमि है, के साथ जुड़ सकें।

बंगाली डायस्पोरा :

बंगाली लोग एक नृजातीय समूह है जिनका निवास बंगाल (अब राजनीतिक रूप से विभाजित भारत और बांग्लादेश में) है। भारत में बंगाली समुदाय मुख्यत: पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा राज्य में रहते हैं। परंतु इसके अलावा बंगाली लोग भारत के झारखंड, असम, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, उड़ीसा और दिल्ली में भी रहते हैं। बंगाली लोग बड़ी संख्या में ब्रिटेन, न्यूर्याक, खाड़ी देशों, पाकिस्तान, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, कनाडा, जापान, आस्ट्रेलिया और सिंगापुर में भी रहते हैं।1947 के भारत का विभाजन भारत और पाकिस्तान के रूप में हुआ और 1971 में पाकिस्तान का विभाजन पाकिस्तान और बांग्लादेश के रूप में हुआ। इसलिए आज का समुद्रपारीय बंगाली डायस्पोरा के सम्बन्ध तीनों देशों से है।

बंगाल के प्रमुख लोगों में शामिल हैं : राजा राम मोहन राय (बंगाल पुर्नजागरण के पिता), रबिंद्रनाथ टैगोर (एशिया के प्रथम नोबल प्राप्त करने वाले साहित्यकार, 1913 गीतांजलि) , स्वामी विवेकानंद, जगदीश चंद्र बोस (वैज्ञानिक), सत्येन्द्र नाथ बोस, सुभाष चंद्र बोस और अरविन्द घोष, सत्यजीत राय, अर्मत्य सेन (अर्थशास्त्री) आदि। बंगाली

डायस्पोरा में अमिताभ घोष का बड़ा नाम है, जिन्होंने भारतीय प्रवासन के इतिहास, संस्कृति आदि से संबंधित कई साहित्य की रचना की जिनमें प्रमुख है- द सर्कल ऑफ़ रिजन, द शैडो लाइन (साहित्य अकादमी पुरस्कार), द कलकत्ता क्रोमोजोम (आर्थर सी क्लार्क अवार्ड), द ग्लास पैलेस आदि।

औपनिवेशिक काल में सिद्धदोष, अनुबंध श्रमिक के रूप में बंगाली समुदाय का प्रवासन ब्रिटिश उपनिवेशों यथा - मॉरीशस, फिजी, गयाना और ट्रिनिडाद, सुरीनाम आदि के लिए हुआ। पूर्व औपनिवेशिक काल में पाल शासकों के समय व्यापारियों तथा धार्मिक गुरूओं संतों का प्रवासन दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में हुआ। 1962 में ब्रिटिश सरकार ने प्रथम 'कॉमन वेल्थ इमिग्रेशन एक्ट' पारित किया। इस एक्ट का उद्देश्य था कॉमनवेल्थ के देशों से सीमित संख्या में प्रवासन ब्रिटेन के लिए। इस एक्ट के द्वारा भारत के बंगाल से बंगालियों का काफी संख्या में प्रवासन हुआ। बाद में बाद में बंगाली नेटवर्क ने और बंगाली लोगों का प्रवासन ब्रिटेन में सरल किया। ये बंगाली अर्धकुशल, कुशल श्रमिक थे। बंगाली का नया प्रवासन 1990 के बाद के दशक में हुआ। 1990 से 2004 के समय में यूनाइटेड किंगडम के लिए जिन बंगालियों का प्रवासन हुआ उनमें अधिकतर दुल्हा, विद्यार्थी, एसाइलम सीकर और अवैध श्रमिकों का था।

07 जुलाई 2012 को *North American Bengali conference (NABC)* का आयोजन लास वेगास, अमेरिका में हुआ। बंगाल की मुख्य मंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने कांफ्रेंस में उपस्थित बंगाली डायस्पोरा से बंगाल राज्य के नवनिमार्ण तथा विकास के लिए मदद की अपील की। ममता का संदेश कांफ्रेंस में रिकार्डेड ऑडियो विजअल द्वारा सुनाया गया।

पंजाबी डायस्पोरा

पंजाबी डायस्पोरा वे होते हैं जो पंजाब क्षेत्र से निकलके दक्षिण एशिया से बहार जाते हैं। प्रवासी पाकित्सानी और भारतीय समूह में पंजाबी जातीय समूह की जनसंख्या काफ़ी बड़ी है। दुनिया में लगभग 1 करोड़ पंजाबी प्रवासी फैले है, विषेशतः ब्रिटेन, उत्तर अमेरिका, दक्षिण-पूर्व एशिया, और मध्य-पूर्व में। ब्रिटिश कोलम्बिया के भारतीय-कैनेडियन में से 85 प्रतिशत पंजाबी सिक्ख हैं, जैसे ब्रिटिश कोलम्बिया के पूर्व प्रधान उज्जल दुसांझ। यूनाइटेड किंगडम को दक्षिण एशिया से सिधे आए प्रवासी में से लगभग 67 प्रतिशत पंजाबी थे। शेष 33 प्रतिशत अधिकतर गुजराती और बांगला थे। पंजाबी लोग ब्रिटेन के सिक्ख और हिंदू समुदय के सबसे बड़े हिस्से हैं। यूरोपीय व्यापारियों के पहुँचने के पहले से ही भारतीय व्यापारिक समुदाय दक्षिण-पूर्ण एशिया में व्यापार के लिए जाने लगे थे। परंतु औपनिवेशिक परिस्थितियों के कारण 19वीं सदी के बाद इसमें तीव्र वृद्धि हुई। 1844-1931 तक व्यापारी समुदायों का सिर्फ मलाया के लिए प्रवासन 643,000 था। इसी तरह के भारतीय व्यापारिक समुदायों का प्रवासन बर्मा तथा अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिए हुआ।

इन प्रवासित व्यापारिक समुदायों में मुख्यत: नट्टूकोट्टी चेट्टियार, चुलिया, मराक्कायार, मप्पिला या मोपलाह(केरला) ,दाउदी बोहरा, खोजा, सिंधी, सिख, मारवाड़ी आदि थे। चेट्टियार व्यापारी 1830 के आस-पास तमिलनाडू तथा केरल से प्रवासित होकर मलाया, बर्मा, श्याम, जावा और सुमात्रा तक गए। मुस्लिम व्यापारिक समुदाय दाउदी बोहरा सूरत से प्रवासित होकर बैकांक गए। 19वीं सदी में सिंधी पहले सिंगापुर, बाद में पेनांग और मनिला में भी बसे। 1947 में सिंधी प्रवासन बढ़ा जब भारत का विभाजन होकर सिंध प्रांत

पाकिस्तान का अंग बना। 19वीं सदी में सिख समुदाय का प्रवासन पहले चौकीदार, पहरेदार, पुलिसबल के रूप में दक्षिण-पूर्व एशिया आए और बाद में व्यापारिक समूह जैसे- वस्त्र व्यवसाय, स्पोर्ट सामग्री के व्यवसाय आदि से जुड़कर सिंगापुर, मलाया, थाईलैण्ड में बस गए।

मलयाली डायस्पोरा :

केरल के लोगों की भाषा मलयालम है। मलयाली बोलने वाले केरल के अलावा कर्नाटक, तमिलनाडू और महाराष्ट्र में है। बड़ी संख्या में मलयाली भाषी लोगों का प्रवासन मध्य एशियाई, यू.एस.ए. और यूरोपीय देशों में हुआ। मलयाली समाज में हिंदू, मुसलमान लोग हैं। हिंदुओं में अम्बालावासी, इज्हासा, कनियार, नायर, नम्बूदरी, पुलावा और विश्वकर्मा प्रमुख हैं। मुस्लमान मलयाली में मोप्पिला या मोपला प्रमुख हैं। केरल के मलयाली भाषी लोगों की बड़ी तादाद खाड़ी देशों में है। 2008 के एक अनुमान के अनुसार, केरल खाड़ी डायस्पोरा जिन्हें केरल खाड़ी डायस्पोरा के नाम से भी जाना जाता है, की संख्या 2.5 मिलियन से अधिक थी। केरल खाड़ी डायस्पोरा का मतलब है वे केरलियन (मलायाली) लोग जो पर्सिया की खाड़ी में मध्य पूर्व के अरब राज्य में रहते हैं

खाड़ी में 'आयल बूम' ने केरल से मलयाली लोगों की बड़ी संख्या को 1972 से 1983 के बीच खाड़ी देशों में प्रवासन को प्रोत्साहित किया। इन मलयाली प्रवासित लोगों में मुख्यत: शामिल थे : श्रमिक , अर्धकुशल और कुशल श्रमिक। 2008 में खाड़ी देशों में कुल केरलियन की संख्या 2.5 मिलियन से ज्यादा थी और इनके द्वारा अपने घरों में लगभग 6.81 मिलियन यू.एस.ए. डालर थे जो भारत सरकार को 2008 में प्राप्त कुल रिमिटेंस के 15.13 प्रतिशत से ज्यादा थे। (भारत सरकार)

खाड़ी प्रवासन के कारण से निम्न-मध्यवर्ग की आर्थिक-सामाजिक में बढ़ोतरी हुई। खाड़ी प्रवासित दुल्हों की मांग बढ़ गई । खाड़ी के सपनों की अभिव्यक्ति मलयाली सिनेमा, साहित्य में भी नजर आने लगी। एम.मुकुन्दन की 'दैवाथिनते विक्रिथिकाल' में खाड़ी में प्रवासन से माहे में खाड़ी प्रवासित इन्क्लेव बना है। जिसमें सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को देखा जा सकता है। खाड़ी देशों में 'आयल बूम' के कारण मलयाली महिला नर्सों का भारी संख्या में प्रवासन हुआ है। केरल से मछली और गरम मसालों का निर्यात जोहांसवर्ग, लंदन, न्यूयार्क और सिडनी के लिए होता है। इसके कारण केरल में विश्व के सभी देशों के बैंक और मुद्राएं यथा- डालर, दिरहम, दिनार, यूरो, पाउण्ड, रियाल, और येन उपलब्ध है। टेलीफोन और इंटरनेट ने दूरियों को छोटा कर दिया है। सिने स्टार , मनोरंजन करने वाले, राजनीतिज्ञ और धार्मिक नेता अपने मलयाली डायस्पोरा के लिए लगातार विदेश जाते हैं । मलयाली डायस्पोरा अपने मूल देश, राज्य की राजनीति, आर्थिक, उद्योग, उद्यम और दान से संबंधित नीतियों को अपने ज्ञान, कुशलता और धन से स्वभूमि और गंतव्य देशों को प्रभावित करते हैं।

1996 में केरल सरकार ने अनिवासी मलयाली डायस्पोरा को अपने साथ जोड़ने के लिए Non Resident Keralites Affairs Department (NORKA) की स्थापना की। (Zachariah, Rajan 2015:7) यह भारत के किसी राज्य की पहली-पहल थी जिसके द्वारा राज्य के बाहर बसे मलयाली डायस्पोरा को राज्य के साथ जोड़ने की पहल एक स्वतंत्र विभाग बनाकर किया गया। केरल की सरकार ने मलयाली डायस्पोरा के लिए कल्याणकारी योजनाओं के साथ इन्शुरेंस और जनकल्याणकारी योजनाओं को भी प्रारंभ किया। इसके लिए केरल सरकार के द्वारा 'इन्वेस्टर मीट' का आयोजन किया गया। साथ ही एक वेवसाईट भी बनयी गयी जिसका नाम gimkerala.com है।

संदर्भ:

1.Jayaram, N.(2004), The Dynamics of Language in Indian Diaspora: The Case of Bhojpuri/Hindi in *Trinidad in The Indian Diaspora: Dynamics of Migration* (p148-165), New Delhi : Sage publication.

2. Jain,R.K,.(2004) Race Relations, Ethnicity, Class and Culture: A Comparison of Indians in Trinidad and Malaysia *in The Indian Diaspora: Dynamics of Migration* (p148-165), New Delhi : Sage publication.

3.Bhat Chandrashekhar, K. Laxmi Narayan (2010), Indian Diaspora, Globalization and Transnational Networks: The South African Context, J of Social Science, 25(1-2-3): 13-23(2010) http://www.krepublishers.com/02-Journals/JSS/JSS-25-0-000-10-Web/JSS-25-1-2-3-000-10-Abst-PDF/JSS-25-1-3-013-10-1147-Bhat-C/JSS-25-1-3-013-10-1147-Bhat-C-Tt.pdf

4.Bhat, Chandrashekhar, Bhaskar, T.L.S.(2011), Locality and Identity in the Indian Diaspora: Reinvention of Regional/Linguistic Diversities in Mauritius in Jayaram,N.(ed) *Diversities in the Indian Diaspora: Nature, Implication, Responses*, (119), New Delhi: Oxford University Press.

5.Hookoomsing, Vinesh, (2009), Language Loss, Language Maintenance:The Case of Bhojpuri and Hindi in Mauritius, Kadekar, Laxmi N, Sahoo Ajay K, Gauri Bhattacharrya (Eds), *The Indian Diaspora: Historical and Contemporary Context,* (p35-53), New Delhi:Rawat Publications.

6.Jagannathan, V.R. (2003), The Linguistic Diaspora in Dubey Ajay (ed), *Indian Diaspora : Global Identity,* (p147-153), Delhi:GOPIO International & Kalinga Publication.

7.Tinker, Hugh (1974), A New System of Slavery,(p48), London: Oxford University Press.

8. लाल बी.वी., रीव्स पी., और राय आर. (संपा.), (2007) द *एनसॉयक्लोपीडिया ऑफ द इंडियन डायस्पोरा*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

9. कोहेन, राबिन. 1997 ग्लोबल डायस्पोरा: एन इंट्रोडक्शन. यूनिर्वसिटी ऑफ वाशिंग्टन प्रेस

10.Zacharia, K.C., Rajan, S.Irudaya (2015), Dynamics of Emigration and Remittances in Kerala: Results from the Kerala migration survey 2015, working papers, www.cds.edu.

11.Vahed, Goolam (2010), An 'Imagined Community' in diaspora: Gujaratis in South Africa , *South Asian History and Culture,* Vol. 1, No. 4, October 2010, 615–629.

12. गांधीजी,1968, दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद.

❑❑❑